डॉ यतेंद्र शर्मा द्वारा रचित 'विवेक चूणामणि हिंदी काव्य' पुस्तक की समीक्षा

प्रोफ़ेसर डॉ पुष्पा रानी , प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
यूनिवर्सिटी मार्के रोड, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, थानेसर, हरियाणा - १३६११९
मो. 9896206889, ईमेल : pushpa33966@gmail.com

भारतीय दार्शनिक चिंतन में अद्वैत वेदांत की स्थापना करने वाले आदि शंकराचार्य का स्थान भारतीय दार्शनिकों में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ।
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥

इस श्लोक के उद्घोष से आचार्य शंकर ने जीवमात्र के एकत्व: एवं ब्रह्म से उसके अभेद को स्थापित किया है। जगत एवं जागतिक व्यवहारों की व्यावहारिक सत्यता को स्वीकार करते हुए तथा सनातन धर्म की एकता और पुनरुद्धार के लिए 8वीं शताब्दी में भारत की चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना का महान कार्य कर देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया जो निम्नवत् है - उत्तर में जोशीमठ , (बद्रीनाथ, उत्तराखण्ड), दक्षिण में श्रृंगेरी शारदा पीठ (कर्नाटक), पूर्व में गोवर्धन मठ (जगन्नाथपुरी,उड़ीसा), पश्चिम में द्वारका शारदा मठ (द्वारका,गुजरात)। आचार्य शंकर कृत 'विवेकचूड़ामणि' ग्रंथ अज्ञान से मुक्ति की यात्रा का मार्गदर्शक है।

यह विविध रुपात्मक जगत् एवं जगत् व्यवहार रज्जू सर्प भ्रम या स्वप्न के सदृश है। अंधेरे में दूर से जो रस्सी साँप दिख रही थी वही पर्याप्त प्रकाश में समीप से रस्सी दिखाई देती है।

ठीक ऐसे ही स्वप्न में दिखाई देने वाले दृश्य जाग्रतावस्था में समाप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार ज्ञान के उदय होने पर सम्पूर्ण नानरूपात्मक जगत् एवं जगत् व्यवहार का मिथ्यात्व सिद्ध हो जाता है तथा एकमात्र ब्रह्म की प्रतीति होती है तथा जीव एवं ब्रह्म का एकत्व सिद्ध होता है। इसी बात को जन सामान्य तक पहुंचाने एवं इसका बोध कराने के लिए आदि शंकराचार्य जी ने 'विवेकचूड़ामणि' ग्रंथ का प्रणयन किया।

मनुष्य इस संसार में अपने आपको शरीर, इन्द्रियां और बुद्धि के साथ अभिन्न मानकर सुख - दुःख के अनगिनत अनुभवों से बंध जाता है, किन्तु यह बंधन वास्तविक नहीं है। इसे ही वास्तविक मान लेना अविद्या एवं इसकी वास्तविकता को जान लेना ही विद्या है।यही अविद्या एवं अज्ञान ही समस्त दोषों का कारण है।इस अज्ञान के नाश हेतु ज्ञान का प्रकाश आवश्यक है और वही ज्ञान इस ग्रंथ 'विवेकचूड़ामणि' का विषय है।'विवेक' अर्थात् नित्य एवं अनित्य का भेद जानने की क्षमता। एकमात्र ब्रह्म ही नित्य है इतर सब कुछ अनित्य है इसलिए विवेक को ज्ञान का चूड़ामणि (शिरोमणि) कहा गया है। यह ग्रंथ उसी विवेक को जागृत करने का एक साधन है। इसके लिए आदि शंकराचार्य जी ने साधक को साधन से सम्पन्न होकर योग्य गुरु के निर्देशन में श्रद्धापूर्वक ज्ञान ग्रहण करने की सलाह दी, तभी आत्म साक्षात्कार या ब्रह्म साक्षात्कार हो सकता है।

- **नित्यानित्य वस्तु विवेक** -नित्य एवं अनित्य के बीच अंतर करने की क्षमता।
- **इहामृतार्थ भोग विराग** - इहलोक़ एवं परलोक के भोगों के प्रति वैराग्य।
- **शमदमादि साधन सम्पन्न** - शम - मन का नियंत्रण, दम - इंद्रियों पर नियंत्रण, उपरति - सांसारिक विषयों से उदासीनता, तितिक्षा – सुख, दुःख को सहने की शक्ति,श्रद्धा - गुरु एवं शास्त्रों में अटूट विश्वास, समाधान - मन की एकाग्रता । इन छः आंतरिक गुणों का विकास।
- **मुमुक्षुत्व** - मोक्ष प्राप्ति की तीव्र इच्छा।

आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित यही आत्मसाक्षात्कार का मार्ग है जिससे अविद्या निवृत्ति स्वत: हो जाती है । आचार्य शंकराचार्य ने इसे सुलभ बनाने के लिए संस्कृत भाषा में 'विवेकचूड़ामणि' ग्रंथ का प्रणयन किया जो अद्वैत वेदांत का अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

डॉ यतेन्द्र शर्मा जी ने 'विवेकचूड़ामणि' ग्रंथ का गवेषणात्मक अध्ययन किया है तथा इसे सर्वजन सुलभ बनाने के लिए अत्यंत सरल रूप में प्रस्तुत किया है जो अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा। अपने समय में आचार्य शंकर जी की भी यही दृष्टि रही होगी परन्तु संस्कृत भाषा के लोक व्यवहार में कम व्यवहार एवं कम लोकप्रिय होने से यह कठिनाई उत्पन्न हुई जो मूल ग्रंथ को क्लिष्ट बना देती है तथा आमजन की समझ से यह दूर हो जाता है। डॉ यतेन्द्र शर्मा जी ने सरल हिन्दी में उन श्लोकों का अर्थ करने के साथ ही उन्हें हिन्दी पद्य रूप में भी रूपांतरित किया है जो निश्चय ही महान कार्य है और इस दृष्टि से तत्वज्ञान के आमजन तक प्रसार में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। विद्वान लेखक ने इस ग्रंथ के कठिन विषयों को भी सरलता से प्रस्तुत करके इसे जन सुलभ बना दिया है। भारतीय दर्शन के सिरमौर , अद्वैत वेदांत के सार को वैश्विक क्षितिज पर प्रसार एवं लोक व्यवहार की दृष्टि से यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। मुझे विश्वास है कि इससे प्रेरित होकर भारतीय ज्ञान परंपरा के मौलिक वेदों, ग्रंथों, उपनिषदों, पुराणों एवं ज्योतिष वैदिक गणित आदि का भी लोकभाषा में अनुवाद एवं प्रसार बढ़ेगा जो पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी एवं शांति स्थापित करने में सहायक होगा।

प्रोफ़ेसर डॉ पुष्पा रानी , प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी - विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
मो. 9896206889, ईमेल : pushpa33966@gmail.com
21 April 2026